आयुर्विज्ञानरत्नाकरः

कविराज
श्रीयोगेन्द्रनाथ
दर्शनशास्त्रि-तर्कदर्शनतीर्थायुर्वेदाचार्येण

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

आयुर्विज्ञानरत्नाकरः

कविराज
श्रीयोगेन्द्रनाथ
दर्शनशास्त्रितर्कदर्शनतीर्थायुर्वेदाचार्येण

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

The Firm will replace the copy/copies free of cost if any defect is found.

प्रकाशक:
डॉ० सी. गिरि:
कुलसचिव:
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालय:)
५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी
नवदेहली-११००५८

योजनासमन्वायक:
डॉ० प्रकाशपाण्डेय:
सहायककुलसचिव: (शो.एवं.प्र.)

© राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्

पुनर्मुद्रितसंस्करणम् : २००७

मूल्य रु० : १०५.००

मुद्रक:
अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
८/२५-ए, विजय नगर, दिल्ली-११०००९
दूरभाष : ६५४३२६५८

अर्जुन सिंह
ARJUN SINGH

मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत
नई दिल्ली-११० ००१
MINISTER OF
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
INDIA
NEW DELHI-110 001

सन्देश

संस्कृत साहित्य में अनेक ग्रन्थरत्न विद्यमान हैं जिनका पठन-पाठन एवं अनुसंधान इस राष्ट्र में सहस्त्रों वर्षों से चला आ रहा है। वेद, शास्त्र, स्मृति एवं पुराण जैसे विशाल ग्रन्थ संस्कृत वाङ्मय का अंग हैं। यह वाङ्मय समय-समय पर प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा परिश्रम एवं आर्थिक व्यय से अंशत: प्रकाशित भी हुआ है। किन्तु समय के साथ इन ग्रन्थों की मुद्रित पुस्तकें छात्रों, विद्वानों एवं सामान्यजनों को दुर्लभ होने लगी हैं। अत: इन दुर्लभ सुसम्पादित ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण कर न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध कराने की योजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं उसके अंगभूत राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के द्वारा कार्यान्वित की गयी है।

मैं आशा करता हूँ कि इस दूरगामी उपक्रम से संस्कृत के विद्वान्, छात्र एवं संस्कृतप्रेमी सामान्यजन लाभान्वित होंगे तथा संस्कृत के ज्ञान, वैभव का विस्तार होगा। साथ ही मैं यह भी कामना करता हूँ कि राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान इस योजना में अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को भी प्रकाशित कर संस्कृत की श्रीवृद्धि करेगा।

(अर्जुन सिंह)

devotion, and genuine Indian outlook in this most important branch of Shastric knowledge.

As for the present work, it is entirely devoted to an examination of the truths that form the very basis of human constitution, the constructive, preservative and disruptive energies in human constitution—the energies that account for the ever-changing nature of human body. One can easily see from his explanations that the author has had no difficulty in reviewing human body as an integral unit of creative energy, a definite part and parcel and an epitome in itself of the whole body of Creation. To know the part—the *vyashti*—one must understand the whole—the *samashti*. Here is the clue to the whole Yoga system with which Ayurveda is concerned. One who has mastered these truths or key positions can confidently march on to conquer the whole position of Ayurveda in the fullness of time. Hence the supreme value of this part of the work, and I have no misgiving that it will be hailed with delight by the Bengali public as a genuine attempt to revive the glory of Ayurveda.

भूमिका

आयुर्विज्ञानरत्नाकराभिधोऽयं निबन्धो न केवलमायुर्वेदशास्त्रजीवातुभिः, किन्तु साङ्ख्यादिदार्शनिकप्रक्रियासु. ताभिरायुर्वेदस्य सङ्गतिनिर्धारणे च परिनिष्णातैः पण्डितवरेण्यैः श्रीयुक्त-योगेन्द्रनाथ-दर्शनशास्त्रि-तर्कषड्-दर्शनतीर्थैः सङ्गृहीतः, विश्वसिमः, न केवलमायुर्वेदविद्यार्थिनां तदध्यापकानां च, किन्तु चिकित्स्यानामप्यध्ययनेन स्वस्वप्रकृतिविनिर्णयेनाहारव्यवहारादीनां तत्तद्योग्यानामवलम्बनीयानामवधारणेऽत्यन्तमेवोपकरिष्यति ॥

निबन्धकारा हीमे वङ्गदेशमण्डनायुर्वेदचिकित्सकवरेण्याश्चिकित्सकगोष्ठ्यां चिकित्स्यगणेषु वा न परिचयमपेक्षन्ते तदीयायुर्वेदतत्त्वविमर्शनपाटवे चिकित्सनप्रक्रियायामनितरसाधारणकौशलप्रकाशने च. इति न नानधिकृत्य किमप्यत्र विलिखामः ॥

खण्डत्रयात्मकेऽत्र निबन्धे—प्रथमखण्डेऽध्यायसप्तकसमलङ्कृते प्रथमाध्यायः—आयुर्वेदलक्षणप्रयोजने. आयुःस्वरूपम्, चिकित्सनीयपुरुषस्वरूपम्, रोगाधिकरणनिर्णयम्, स्वास्थ्यव्याधिस्वरूपविभागादीन् विशदयन्नुपोद्घाततामस्य निबन्धस्य भजते ॥

द्वितीयाध्यायस्तु सामान्यतो धातुस्वरूपविभागम्, विशिष्य च वातस्य स्वरूपम्, प्रभावम्, सलक्षणनिर्देशं रूक्ष-शीत-लघु-सूक्ष्म-चल-विशद-खर-रूपेण विभागं चरकाद्यनुसारेण प्रतिपादयति ॥

तृतीयाध्यायः—सामान्यतो वातादिप्रकृतिनिमित्तलक्षणे, विशिष्य च वातप्रकृतिपुरुषाणां चिकित्सनीयानां लक्षणादिना परिचयम्, वातादिष्वान्तरस्य वातस्य प्राधान्यनिमित्तम्, प्रधानं स्थानम्, विकृताविकृतावस्थालक्षणकार्यादीनाम्, तेन प्रसङ्गेन विशिष्य शोणितोच्छ्वासस्य (Blood-pressure) नाम्ना साम्प्रतं प्रसिद्धस्य लक्षणादिकम्, बाह्यवातप्रभावम्, तेन प्रसङ्गेन वायुपरिवर्तनगुणान्, समुद्रतीर-पार्वतदेशस्थजलादिगुणान्,

जिस तरह सत्त्व, रजः और तमो नामक तीनो गुणों की साम्यावस्था ही प्रकृति है, देह जगतमें भी उसी तरह तीनों गुणोंका अनुकरण करनेवाले पित्त, वायु और कफ नामक तीनों दोषों की साम्यावस्था ही प्रकृति है। यही प्रकृति आरोग्य, स्वास्थ्य इत्यादि नामोंसे पुकारी जाती है। उक्त सत्त्व, रजः और तमो गुण की विषमता ही जिस तरह विकृति है, और उस वैषम्य की वजहसे ही जिस तरह विकारात्मक जगत की सृष्टि हुई है। उसी तरह वायु, पित्त और कफ नामके तीनों दोषोंकी विषमावस्था ही विकृति है। और इस विषमतासे ही ज्वर आदि बहुत तरह के रोगों की सृष्टि हुई हैं और वे ही विकार, अस्वस्थता, अनारोग्य इत्यादि नामसे पुकारे जाते हैं। जिस तरह सत्त्वरजस्तम तीनों की अल्पता, मध्यता, और अधिकतारूपी तारतम्य की वजहसे और विशेष विशेष कर्म के द्वारा अलग २ यह संसारकी सृष्टि हुई है वैसा ही दोषत्रयको भी अल्पता, मध्यता और अधिकरूप तारतम्यके वजहसे सम्प्राप्ति भेद द्वारा भी आहार, आचार आदि सभी कर्म विशेषमें प्रत्येक रोग के भी चार पाञ्च इत्यादि प्रकारोंके भेद उत्पन्न होते है। जगत के हितकामी त्रिकालज्ञ महर्षिओंने इसी तरह बहिर्जागतिक (बाहरी जगत के) तीनो गुणोंका और देह-जगतके तिनों दोषोंका साम्य और वैषम्यकी वजहसे प्रकृति और विकृतिका भाव दिखा दिया है। उद्देश्य यही है कि जगत के मनुष्य इस पर विचारकर विकार का कारण हटाकर प्रकृतिस्थ रह सकें और इसी तरहका आहार विहार कर सकें। और इसके परिणाम-स्वरूप दीर्घायु प्राप्त कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी चतुर्वर्ग साधन कर इस लोक और पर लोकमें सुखी हो सकें। नगररक्षक जिस तरह नगर की रक्षाके विषय में नगररक्षक मनोयोगी बना रहता है रथी अर्थात् रथपर रहनेवाला अथवा योद्धा जिस तरह विशेष सावधानतासे रथ की रक्षा करता है, मेधावी अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति भी उसी तरह अपना शरीर स्वस्थ रहने के लिये विशेष मनोयोग के साथ ऐसे ही आहार आचारादि का अनुष्ठान करें॥ १॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

कलिकाता विश्वविद्यालयस्याशुतोष-संस्कृताध्यापक—
महामहोपाध्याय-

श्रीयुक्त विधुशेखर भट्टाचार्य्य शास्त्रिणामभिमतम्।

यत् सत्यं नूत्नोऽप्ययमायुर्विज्ञानरत्नाकर आयुर्वेदतत्त्व-बुभुत्सूनां भूयसे श्रेयसे सम्पत्स्यते इति को नु नाम प्रेक्षावतां न ब्रूयान्निर्विचिकित्सम्। न केवलमतीतान्येव, अपि तु स्वयमनुभूतानि भूयांसि प्रत्युत्पन्नान्यपि तत्त्वानि निवद्धान्यत्र रचयित्रा। वायु-पित्त-कफमूलकमेव चिकित्सितमित्याहुरायुर्वेदविदः। तदेतत् सुविशदं विवृण्वता पुरःसरेणानेनागदङ्काराणां प्रदर्शितमात्मनो न केवलं वैद्यकतन्त्रनिष्णातत्वमेवातिगम्भीरम्, अपि तु वैदुष्यमप्यतिरमणीयञ्चातिमहनीयञ्चेति।

१७६३ सं०
ज्यैष्ठकृष्णा षष्ठी

भट्टाचार्यो विधुशेखरः।

भट्टपल्ली-वास्तव्य-महामहोपाध्याय—

श्रीयुक्त पञ्चानन तर्करत्नमहोदयानामभिमतम्

श्रीरामः शरणम्।

अथर्ववेदमूलकमायुर्वेदशास्त्रं जगतः कल्याणाय भरद्वाजात्रेयप्रभृतिभिर्महर्षिभिः पृथिव्यां प्रचारितम्। तस्य च महतो विद्यास्थानस्य परिगणना विष्णुपुराणे वर्त्तते, यथा—चतुर्दशविद्यागणनानन्तरम् 'आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वमर्थशासनम्' इत्येवं चतुर्भिः प्रस्थानैर्मिलिताश्चतुर्दशविद्याः 'विद्या ह्यष्टादशैव ता' इति निर्णीतम्। तत्र च ऋषिप्रणीता आचार्यप्रणीताश्च बहवो ग्रन्था विद्यन्ते, तेभ्यः सारमाकृष्य नानाशास्त्रपारदृश्वना ब्राह्मणेनायुर्वेदशास्त्ररहस्य-विदां वरेण्येन रोगतन्निदान-भेषजतत्त्वनिर्णयनिपुणेन श्रीमता योगेन्द्रनाथतर्कदर्शनतीर्थदर्शनशास्त्रिणा निर्मित आयुर्विज्ञान-